Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बिलासपूर छत्तीसगढ़ की लोक-नायिका वीरांगना बिलासा बाई केंवटिन

रमेश बाबू गुप्ता*

* एम. ए. (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – बिलासपुर, छत्तीसगढ़ राज्य के सबसे महत्वपूर्ण नगरों में से एक है, जिसकी न्यायधानी के रूप में विशेष पहचान है। इस नगर के नामकरण की जड़ें एक लोक-नायिका, वीरांगना बिलासा बाई केंवटिन, से जुड़ी मानी जाती हैं, जो एक मछुआरा (केवट/निषाद) परिवार में जन्मी एक साहसी महिला थीं। यह शोध पत्र बिलासा बाई के जीवन, उनसे संबंधित जनश्रुतियों, ऐतिहासिक संदर्भों, सांस्कृतिक महत्व तथा उनकी स्मृति में किए गए आधुनिक सम्मान (जैसे बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट का नामकरण) का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, इस अध्ययन में उनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता को लेकर विद्धानों के बीच चल रही बहस को भी संतुलित रूप से प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि बिलासा बाई का जीवन-वृत्त मुख्यत: मौखिक परंपरा, लोकगीतों और जनश्रुतियों पर आधारित है, न कि समकालीन लिखित ऐतिहासिक दस्तावेजों पर।

प्रस्तावना – भारत के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ ऐसे लोकनायक और लोकनायिकाएँ हुई हैं, जिनका जीवन इतिहास की पुस्तकों में विस्तार से दर्ज नहीं है, किंतु जनमानस की स्मृति और मौखिक परंपरा में वे आज भी जीवंत हैं। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर नगर की पहचान से जुड़ी वीरांगना बिलासा बाई केंवटिन एक ऐसा ही नाम है। कहा जाता है कि इसी वीरांगना के नाम पर बिलासपुर नगर का नामकरण हुआ, जो आज छत्तीसगढ़ राज्य की न्यायधानी (हाईकोर्ट का मुख्यालय) तथा राजस्व मंडल का मुख्यालय है। बिलासा बाई की कहानी मुख्यत: केवट (मछुआरा) समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी हुई है और यह क्षेत्रीय लोक-चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। वर्तमान समय में, जब चकरभाठा हवाई अड्डे का नाम बदलकर 'बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट' रखा गया, तब इस नाम की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर हुई और अनेक लोगों की जिज्ञासा इस लोकनायिका के जीवन को जानने में बढ़ी।

उद्देश्य एवं पद्धति– इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

बिलासा बाई केंवटिन से संबंधित उपलब्ध जनश्रुतियों एवं ऐतिहासिक संदर्भों का संकलन और विश्लेषण करना।

बिलासपुर नगर के नामकरण की पृष्ठभूमि को समझना।

बिलासा बाई के सम्मान में किए गए आधुनिक सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक प्रयासों का अध्ययन करना।

उनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता को लेकर विद्धानों के मध्य उपस्थित मतभेदों को संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना।

केवट/निषाद समुदाय की सामाजिक पहचान में बिलासा बाई के महत्व को रेखांकित करना।

इस अध्ययन की पद्धति मुख्यत: द्वितीयक स्रोतों (गजेटियर के अंशों, स्थानीय पत्रकारिता, लोक-साहित्य तथा क्षेत्रीय समाचार माध्यमों में प्रकाशित सामग्री) पर आधारित है, क्योंकि बिलासा बाई से संबंधित कोई एक समेकित, समकालीन एवं आधिकारिक ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। अत: यह शोध पत्र इतिहास और लोक-स्मृति के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए आगे बढ़ता है।

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि– बिलासा बाई की कथा को समझने के लिए पहले उस भू-भाग और उस कालखंड को समझना आवश्यक है, जिसमें उनका जीवन बीता माना जाता है। कहा जाता है कि यह घटनाक्रम लगभग सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी का है, जब रतनपुर छत्तीसगढ़ क्षेत्र की राजधानी हुआ करती थी। उस समय रतनपुर पर कलचुरी राजवंश का शासन था। कल्याण साय इस राजवंश के एक प्रमुख शासक माने जाते हैं।

अरपा नदी के किनारे बसा क्षेत्र, जो वर्तमान बिलासपुर नगर का हिस्सा है, उस समय घने जंगलों और वन्यजीवों से घिरा हुआ था। इस क्षेत्र में मछुआरा (केवट) समुदाय के लोग नदी किनारे बसते थे और मछली पकड़ना उनकी आजीविका का प्रमुख साधन था। यही सामाजिक-भौगोलिक परिवेश बिलासा बाई के जीवन की पृष्ठभूमि बनता है।

बिलासा बाई का जन्म एवं प्रारंभिक जीवन– जनश्रुतियों के अनुसार, बिलासा का जन्म परसूराम और बैशाखा बाई नामक केवट दंपति के घर हुआ था। उस युग में सामान्यत: महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित रखा जाता था, किंतु बिलासा बचपन से ही अत्यंत साहसी और स्वतंत्र प्रवृत्ति की थीं। वे नदी और जंगल की ओर निर्भीक होकर जाया करती थीं तथा हिंसक वन्य पशुओं से अपनी रक्षा के लिए पारंपरिक हथियार चलाने में निपुण थीं।

इस प्रकार की परवरिश ने बिलासा के भीतर वह आत्मविश्वास और शौर्य विकसित किया, जिसने आगे चलकर उन्हें एक साहसी युवती के रूप में स्थापित किया। मछुआरा समुदाय की एक साधारण कन्या का इस प्रकार निर्भीक व्यक्तित्व विकसित करना, उस समय के सामाजिक ढाँचे को देखते हुए, स्वयं में उल्लेखनीय माना जाता है।

वीरता की गाथा: विभिन्न जनश्रुतियाँ– बिलासा बाई की वीरता से जुड़ी कथा के कई संस्करण प्रचलित हैं, जो अलग-अलग स्रोतों और मौखिक परंपराओं से प्राप्त होते हैं। इन सभी में एक समान सूत्र यह है कि बिलासा ने राजा कल्याण साय की जान बचाई अथवा उनकी सहायता की, जिसके

फलस्वरूप राजा ने उन्हें सम्मानित किया।

प्रथम जनश्रुति वन्य पशु के आक्रमण से रक्षा– एक प्रचलित कथा के अनुसार, राजा कल्याण साय बिलासपुर के निकटवर्ती जंगलों में शिकार के लिए गए थे, जहाँ वे किसी खूँखार वन्य पशु के आक्रमण से घायल हो गए। उस संकट की घड़ी में बिलासा बाई ने अपने साहस और परंपरागत हथियार–कौशल का परिचय देते हुए राजा की प्राण–रक्षा की। राजा इस घटना से अत्यंत प्रभावित हुए और उन्होंने बिलासा को अपना सलाहकार नियुक्त करते हुए अरपा नदी के दोनों किनारों की जागीर उनके नाम कर दी।

द्वितीय जनश्रुति– षड्यंत्र की सूचना– एक अन्य संस्करण के अनुसार, जब कुछ आक्रमणकारियों द्वारा आदिवासी गोंड राजा कल्याण साय की हत्या का षड्यंत्र रचा जा रहा था, तब बिलासा बाई केंवटिन ने साहसपूर्वक इसकी सूचना राजा तक पहुँचाई। इस चेतावनी के कारण राजा समय रहते सतर्क हो गए और अपने शासन की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके।

तृतीय जनश्रुति– सम्राट जहाँगीर की सेना से मुक्ति– एक तीसरी और अधिक विस्तृत लोककथा के अनुसार, रतनपुर पर सम्राट जहाँगीर की सेना ने आक्रमण किया और छल–पूर्वक राजा कल्याण सिंह को बंदी बनाकर दिल्ली ले गई। राजा के सेनापति गोपाल राय ने राजा को मुक्त कराने के लिए दिल्ली जाने की योजना बनाई। इस अभियान में तीन व्यक्ति शामिल हुए, जिनमें बिलासा बाई केंवट भी थीं। कहा जाता है कि राजा को मुक्त कराने में बिलासा बाई की भूमिका प्रमुख रही। इस घटनाक्रम का वर्णन क्षेत्रीय 'गोपल्ला गीत' नामक लोकगीत परंपरा में भी मिलता है, जो सेनापति गोपाल राय के नाम पर आधारित है।

इन तीनों जनश्रुतियों में विवरण भिन्न होते हुए भी एक साझा भाव प्रकट होता है बिलासा बाई एक असाधारण साहस वाली स्त्री थीं, जिसने संकट के समय अपने राजा और अपने समाज की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भिन्नता इस बात का भी संकेत है कि बिलासा की कथा मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रही, जिसमें समय के साथ स्थानीय विविधताएँ जुड़ती गईं।

राजा द्वारा सम्मान एवं जागीर प्रदान– अधिकांश कथाओं में यह समान रूप से वर्णित है कि बिलासा के साहस और स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर राजा कल्याण साय ने उन्हें विशेष सम्मान प्रदान किया। राजा के आदेश पर बिलासा को सैनिक वेशभूषा में घोड़े पर सवार होकर रतनपुर आमंत्रित किया गया, जो उस युग की सामाजिक संरचना में एक साधारण मछुआरिन के लिए अत्यंत असाधारण सम्मान था। इसके पश्चात राजा ने उन्हें अरपा नदी के दोनों किनारों की जागीर प्रदान की, जिससे बिलासा का प्रभाव एवं पहचान क्षेत्र में और अधिक सुदृढ़ हुई।

बिलासपुर नगर का नामकरण– जनश्रुति और स्थानीय परंपरा के अनुसार, बिलासा बाई केंवटिन के नाम पर ही इस नगर का नाम बिलासपुर पड़ा। गजेटियर के एक अंश में भी लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व एक मछुआरिन बिलासा के नाम पर इस नगर के नामकरण की बात कही गई है। कुछ स्रोतों में यह भी उल्लेख मिलता है कि यह नामकरण–परंपरा भूगोल संबंधी पुस्तकों में भी दर्ज है तथा देवार समुदाय के लोकगीतों में बिलासा के जीवन का वर्णन मिलता है।

बिलासा जिस स्थान पर निवास करती थीं, वह क्षेत्र आज बिलासपुर के पचरीघाट नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि इसी पचरीघाट में बिलासा बाई की समाधि भी स्थित है, जो आज भी स्थानीय लोगों, विशेषकर केवट समुदाय के लिए, श्रद्धा का केंद्र बनी हुई है।

स्मृति स्थल, प्रतिमा एवं जयंती समारोह– बिलासपुर नगर में बिलासा केवटिन की एक आदमकद प्रतिमा स्थापित की गई है, जो नगर के गौरव और उनकी स्मृति का प्रतीक मानी जाती है। छत्तीसगढ़ में बिलासा को एक देवी स्वरूप के रूप में देखा और पूजा जाता है। प्रतिवर्ष 18 जनवरी को उनकी जयंती मनाई जाती है, जिसमें विशेषकर केवट/निषाद समाज के लोग बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्मिलित होते हैं। इन आयोजनों में बिलासा बाई के जीवन तथा उनके योगदान को स्मरण करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

वर्तमान में सम्मान– बिलासा बाई की स्मृति को संस्थागत रूप देने के लिए हाल के वर्षों में अनेक प्रशासनिक कदम उठाए गए हैं– चकरभाठा (बिलासपुर) स्थित हवाई अड्डे का नाम बदलकर बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट रखा गया, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर इस लोकनायिका की चर्चा को नया विस्तार दिया।

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा मत्स्य पालन क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष एक लाख रुपये का बिलासा देवी पुरस्कार प्रदान किया जाता है, जो उनके केवट (मछुआरा) समुदाय से जुड़े होने का सम्मान दर्शाता है। वर्ष 2025 में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने केंद्रीय रक्षा मंत्रालय के साथ मिलकर बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट के विस्तारीकरण संबंधी चर्चा की, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह नाम अब प्रशासनिक स्तर पर स्थायी पहचान प्राप्त कर चुका है।

इन सभी प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि बिलासा बाई अब केवल एक स्थानीय जनश्रुति तक सीमित न रहकर, राज्य की सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक पहचान का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं।

केवट/निषाद समुदाय में सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व– बिलासा बाई की कथा केवट अथवा निषाद समुदाय के लिए विशेष गौरव का विषय है। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से मछुआरा समुदाय को सामाजिक पदानुक्रम में प्राय: हाशिए पर रखा गया है। ऐसे में एक केवट परिवार की कन्या का राजा द्वारा सम्मानित किया जाना और उसके नाम पर एक संपूर्ण नगर का नामकरण होना, इस समुदाय के लिए आत्म–गौरव और सामाजिक पहचान का सशक्त प्रतीक बन जाता है।

इसी कारण बिलासा बाई की जयंती और उनकी स्मृति में आयोजित कार्यक्रम, केवट/निषाद समाज की सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक अस्मिता को सुदृढ़ करने का माध्यम बन चुके हैं। कुछ लोकगीतों तथा सामाजिक विमर्शों में बिलासा बाई की तुलना एकलव्य जैसे अन्य लोकप्रिय आदिवासी–वनवासी नायकों से भी की जाती है, जो सामाजिक न्याय और सम्मान की परंपरा से जुड़ी है।

यह उल्लेखनीय है कि बिलासा बाई से संबंधित समस्त विवरण मुख्यत: मौखिक परंपरा, लोकगीत, और जनश्रुतियों पर आधारित हैं। किसी समकालीन राजकीय अभिलेख, ताम्रपत्र अथवा शिलालेख में उनका सीधा उल्लेख अब तक व्यापक रूप से प्रमाणित नहीं हो सका है। इसी कारण बिलासपुर के कुछ इतिहासकारों एवं वरिष्ठ पत्रकारों ने बिलासा बाई के ऐतिहासिक अस्तित्व को लेकर प्रश्न भी उठाए हैं।

जब चकरभाठा एयरपोर्ट का नाम बदलकर बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट रखा गया, तब सामाजिक मंचों पर इस विषय पर विस्तृत बहस हुई। कुछ टिप्पणीकारों का मत है कि निश्चित ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में यह

संभव है कि समाज ने अपनी सांस्कृतिक पहचान और गौरव के लिए एक प्रतीकात्मक चरित्र गढ़ा हो। इस दृष्टिकोण को रखने वालों का तर्क है कि जिस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई के इतिहास में झलकारी बाई जैसी अनेक वीरांगनाओं के योगदान को समुचित स्थान नहीं मिल सका, उसी प्रकार बिलासा बाई की कथा भी हो सकता है कि आंशिक रूप से लोक-कल्पना और आंशिक रूप से वास्तविक ऐतिहासिक स्मृति का मिश्रण हो।

दूसरी ओर, स्थानीय समुदाय और अनेक क्षेत्रीय लेखकों का मानना है कि केवल लिखित दस्तावेजों के अभाव से किसी लोक-नायिका के अस्तित्व को पूर्णत: नकारा नहीं जा सकता, विशेषकर तब जब मौखिक परंपरा, लोकगीत तथा भौगोलिक नामकरण जैसे अप्रत्यक्ष प्रमाण एक समान कथा की ओर संकेत करते हों। भारत के अनेक क्षेत्रीय इतिहासों में लोक-स्मृति ही एकमात्र उपलब्ध स्रोत रही है, जिसे पूर्णत: अस्वीकार करना उचित नहीं माना जाता।

इस प्रकार, विद्धत समुदाय में बिलासा बाई की ऐतिहासिकता को लेकर स्पष्ट सहमति नहीं है, किंतु उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ता को लेकर किसी को कोई संदेह नहीं है। यह अंतर इतिहास और स्मृति के बीच के उस सूक्ष्म भेद को रेखांकित करता है, जो लोक-अध्ययन में एक महत्वपूर्ण विषय माना जाता है।

लोकगीत एवं मौखिक परंपरा में बिलासा- बिलासा बाई का जीवन- वृत्तांत छत्तीसगढ़ की समृद्ध मौखिक परंपरा का हिस्सा है। देवार समुदाय के लोकगीतों में उनके साहस और जीवन का वर्णन मिलता है, वहीं 'गोपल्ला गीत' जैसी लोकगीत-परंपरा में सेनापति गोपाल राय के साथ बिलासा बाई की भूमिका का उल्लेख किया जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषा में उनके सम्मान में रचित यह पंक्ति आज भी लोकप्रिय है, छत्तीसगढ़ी शान है, मातु बिलासा मान। देखो आज बिलासपुर, है इसकी पहचान। यह पंक्ति दर्शाती है कि बिलासा बाई अब केवल एक ऐतिहासिक/अर्ध-ऐतिहासिक चरित्र न रहकर, संपूर्ण छत्तीसगढ़ी अस्मिता की प्रतीक बन चुकी हैं।

मौखिक परंपरा की यह विशेषता होती है कि वह समय के साथ अपने भीतर स्थानीय विविधाताएँ और नई व्याख्याएँ समाहित करती जाती है। यही कारण है कि बिलासा बाई से जुड़ी कथाओं में विभिन्नता पाई जाती है, फिर भी उनका मूल भाव, साहस, स्वामिभक्ति और समाज-रक्षा, सभी संस्करणों में समान रूप से विद्यमान रहता है।

निष्कर्ष - वीरांगना बिलासा बाई केंवटिन छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। चाहे उनकी कथा को पूर्णत: ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाए अथवा लोक-स्मृति और जनश्रुति के मिश्रण के रूप में देखा जाए, इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने बिलासपुर नगर की पहचान और केवट/निषाद समुदाय की सामाजिक अस्मिता को गहराई से प्रभावित किया है। एक साधारण मछुआरा परिवार में जन्मी स्त्री का साहस, स्वामिभक्ति और सामाजिक योगदान, राजा द्वारा सम्मानित होना, और अंतत: एक पूरे नगर के नामकरण का आधार बनना कृ यह गाथा स्वयं में सामाजिक समावेशन और स्त्री-शौर्य की एक प्रेरणादायी मिसाल प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में बिलासा देवी केंवट एयरपोर्ट का नामकरण, प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली जयंती, तथा मत्स्य पालन के क्षेत्र में उनके नाम पर दिया जाने वाला पुरस्कार ये सभी इस बात के प्रमाण हैं कि बिलासा बाई की स्मृति अब केवल लोक-कथा तक सीमित न रहकर, राजकीय एवं संस्थागत पहचान का हिस्सा बन चुकी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. नवभारत, छत्तीसगढ़ की वीरांगना बिलासा, बिलासपुर फरवरी 2021
2. नई दुनिया, छत्तीसगढ़ की वीरांगना बिलासा देवी केवट बिलासपुर अगस्त 2024
3. गोंडवाना एक्सप्रेस, यक्ति विशेष बिलासा बाई केंवटीन जयंती, जनवरी 2023

****